युग के महासमर में प्यार हमारी पूँजी है, विचार और संवेदनाएँ हमारे अस्त्र-शस्त्र हैं 2

प्राकृतिक खेती के लिए आनलाईन संगोष्ठी 3

समग्र देश में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। 4

विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमो के माध्यम से युगचेतना का विस्तार 6

विश्व योग दिवस घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग- देश अपना बने निरोग अभियान की शुरुआत

श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्याजी ने जारी किया एक मोबाईल नंबर 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जुलाई 2021

वर्ष : 34, अंक : 02

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जुलाई 2021

वार्षिक चंदा : .....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

तुम सब श्रेष्ठ साँचा बन जाओ

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कही गई अपनों से अपनी बात

मेरे प्यारे बच्चो!

तुम सभी के बीच हमारे आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह है कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग-परिवर्तन कर सके, क्योंकि उनके पास काम के इंसान थे। विवेकानन्द के पास निवेदिता व कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नज़र आते हैं। यदि काम के इनसान होते तो जमीन पलट दी गई होती। सारे समाज का कायाकल्प हो गया होता।

गाँधी जी ने अपने साथ रहने वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। जो उनसे पूरी तरह जुड़े धन्य हो गए, श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ तो तुम सबका व्यक्तित्व बन जाए, सभी सँवर जाएँ। इसके लिए हमें तुमसे और कुछ भी नहीं, केवल व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

समर्पण-विसर्जन की साधना

आज से 63 वर्ष पूर्व हमने वसन्त पर्व पर अपने भगवान् (गुरु) से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने, उसकी अनगिनत उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका व्यक्तित्व भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो।

हमने जो समर्पण किया, उसके बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमारे अन्दर प्रभावोत्पादकता भर दी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनन्दिन आचरण में। यही तुम्हारे अन्दर भी आ जाएगी। बस कसौटी एक ही 'अहं' को गलाना, विसर्जन, समर्पण। जब तक अहंकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा। 'अहं' ही है, जिसके कारण जीवन में न सिद्धान्त, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है।

तुम्हें ईसामसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्य ने उनसे कहा कि हम भी आपके समान महान और बड़ा बनना चाहते हैं। हम क्या करें? तो उन्होंने एक ही जवाब दिया-बच्चो! मैं जीवन भर तिनका बना, विनम्र बना, गला, इसलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका। अपनी इच्छा समाप्त कर दीं तो सही अर्थों में बड़े बन गए। पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो। तुम वैसा बन गए तो पेड़ बन सकोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं। जो स्वयंसेवक जितना बड़ा हैं, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं।

वाणी संयम की साधना

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग है। मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष सम्पर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है, वही परस्पर चर्चा- व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। प्याज खाने और शराब पीने वाले के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक

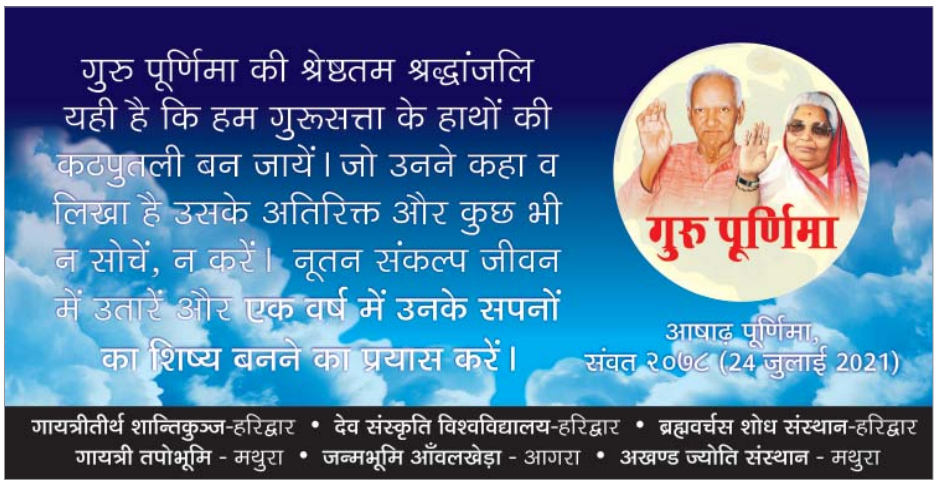

हमारी एक ही महत्त्वाकाँक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते हैं। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारी मन की बात है। गुरु-शिष्य एक- दूसरे से अपने मन की बात कहकर हल्के हो जाते हैं। हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो? पति-पत्नी की तरह, गुरु व शिष्य की आत्मा में भी परस्पर ब्याह होता है, दोनों एक-दूसरे से घुल-मिलकर एक हो जाते हैं।

समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिटाकर एक हो जाना। तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकाँक्षाओं को हमारी अनन्त आध्यात्मिक महत्त्वाकाँक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं जिन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह पतिव्रता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो? इसके लिए निरहंकारी बनो। स्वाभिमानी तो होना चाहिए, पर निरहंकारी बनकर। निरहंकारी का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास।

इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है।

व्यक्तित्व बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो। तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं, मात्र निन्दा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो, तुरन्त तुम्हें परिणाम मिलने चालू हो जाएँगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात को। चापलूसी और वाणी की मिठास दोनों नितान्त भिन्न चीजें हैं।

वाणी व्यक्तित्व का हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार भी हो, तो बेकार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जाएगा, बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा। अपनी विनम्रता, दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास, यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

तुम्हें कुम्हार, तुम्हें ही साँचा बनना है

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना, चाँदी ढेरों लाकर रखा है, तुम्हीं को साँचा बनकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे अच्छे व्यक्ति छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मेटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है, पर 'डाई' कहीं- कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्रेष्ठ 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

श्रम-सहकारिता का सम्मान करो

तुमसे दो और अपेक्षाएँ हैं- एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती-हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा-बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह है कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं, कभी उसका मूल्यांकन किया ही नहीं। हमारा जीवन निरन्तर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घण्टे काम करता है, नौकर आठ घण्टे तथा चोर चार घण्टे काम करता है। तुम सब अपने आपसे पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं? कठोर परिश्रम करो, अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की है। इसी को पुण्य परमार्थ, सेवा, उदारता कहते हैं। अपना मन सभी से मिलाओ। मिल-जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है। मन से ब्राह्मणत्व की साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनोगे, फिर साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवाबुद्धि का, दूसरों की पीड़ा अनुभव कर भाव-सम्वेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है। आज इस वर्ष गुरुपूर्णिमा पर्व पर तुमसे कुछ अपेक्षाएँ हैं। आशा है तुम इन्हें अवश्य पूरा करोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है, जो तुमसे कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है तुम कितना हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो।

*यह आलेख "भाव संवेदनाओं का विकास करना ही साधुता है।" शीर्षक से मोबाइल एप **awgp literature** पर उपलब्ध है।*

सम्पादकीय

युगनिर्माणी आस्थाओं का आरोपण समय की माँग है

युग के महासमर में प्यार हमारी पूँजी है, विचार और संवेदनाएँ हमारे अस्त्र-शस्त्र हैं

अवसर अनुकूल है

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद मास का यह समय ऊर्वरता से भरापूरा है। इन दिनों भीषण गर्मी के बाद जब बादल शीतल बूँदें बरसाते हैं तो सर्वत्र आनन्द छा जाता है। जब तपती सूखी धरती पर हरियाली छाने लगती है तो चतुर किसान मौसम की अनुकूलता पाकर गुड़ाई, बुवाई, निराई के कामों में जुट जाते हैं। वर्तमान समय में हम पर्यावरण की इसी अनुकूलता का लाभ उठाने के लिए पूरे मनोयोग और उत्साह के साथ जुट गए हैं। इन्हीं दिनों अपने मिशन का वृक्षगंगा अभियान भी पूरे जोश और उत्साह के साथ गतिशील हो गया है। हम गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक के एक मास को 'वृक्षारोपण मास' के रूप में मनायेंगे और लाखों-करोड़ों वृक्षों की पौध लगायेंगे। शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में 10,000 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वन' स्थापना का हमारा लक्ष्य है।

यह समय धरती की ऊर्वरता की दृष्टि से ही नहीं, मानवीय मन में आस्थाओं के आरोपण की दृष्टि से भी अनुकूल अवसर लेकर आता है। आषाढ़ पूर्णिमा-गुरुपूर्णिमा श्रेष्ठता के प्रति श्रद्धा के आरोपण की वेला है। यह अपनी मार्गदर्शक सत्ता, अपने गुरुदेव के प्रति समर्पण, विसर्जन, विलय की भावना को प्रगाढ़ करने की विशिष्ट वेला है। यह वह समय है जब यदि अपने इष्ट-आराध्य के प्रति सच्चा समर्पण किया जाय तो व्यक्ति की नर से नारायण, मानव से महामानव बनने की यात्रा का शुभारम्भ हो जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

हमने वसन्त पर्व पर अपने भगवान् से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने, उसकी अनगिनत उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका व्यक्तित्व भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो।"

गुरुसत्ता की आकांक्षा

हमारे समर्पण की सार्थकता परम पूज्य गुरुदेव और परम वन्दनीया माताजी के महान उद्देश्यों के साथ जुड़ी है। हम सामान्य नहीं हैं, उस महान अवतारी चेतना के अंग-अवयव हैं जो युग निर्माण जैसे विराट लक्ष्य को लेकर अवतरित हुई है। हमारे मन में यह विश्वास प्रबल होना चाहिए कि हमारा जन्म पेट-प्रजनन तक सीमित रहकर अपना बहुमूल्य जीवन व्यर्थ गँवा देने के लिए नहीं हुआ है, हमें एक विशेष प्रयोजन के लिए चुना और गढ़ा गया है। हमारे मन में परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य संरक्षण और अनुदानों के प्रति गहरा विश्वास होना चाहिए।

सेनाएँ जीतती भी हैं और हारती भी हैं। सैनिकों को अपना सर्वोच्च बलिदान भी देना पड़ता है। लेकिन उनका जीवन उनके महान उद्देश्य के लिए सदैव याद किया जाता है। मरते तो सभी हैं, सुख-दुःख सबके जीवन में आते हैं। दुःख से, बीमारी से, दुर्घटनाओं में भी लोग मरते ही हैं। लेकिन लोकमंगल के लिए जीवन खपाने और बुलंद हौसलों के साथ आगे बढ़कर जो चुनौतियों का सामना करते हैं, उनकी कष्ट-कठिनाइयाँ तप बन जाती हैं। जैसे तप कर आम के फल में मिठास आती है, जैसे तप से पक कर फसलें स्वादिष्ट और पोषक तत्त्वों से भरपूर होती जाती हैं, वैसे ही लोकमंगल के लिए, श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए जीवन लगाने वालों को जो सुख-संतोष प्राप्त होता है उसकी दिव्य अनुभूतियों को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। आधी धोती पहन कर जीवन व्यतीत करने वाले महात्मा गाँधी के आत्मसंतोष की अनुभूति अपने स्वार्थ और अहंकार की पूर्ति के लिए सुख-साधनों के अंबार लगा देने में, ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी करने में जीवन लगा देने वाले कदापि नहीं कर सकते। घर की पूँजी लगाकर साधारण-सा जीवन जीते हुए अनाथ बच्चों को पालने वाली डॉ. सिंधुताई सपकाल और श्री कैलाश सत्यार्थी जैसे लोकसेवियों के जीवन के आनन्द और आत्म संतोष का वे स्पर्श भी नहीं कर सकते।

हम सब जानते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी का जीवन तथा उनका मिशन मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित है। मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण हमारा लक्ष्य है। ऐसी महान अवतारी चेतना के साथ जुड़ने के अपने सौभाग्य को हम समझें और अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को क्रमशः घटाते हुए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ और साधनों को लोकमंगल के लिए अर्पित करने का साहस बढ़ाते चलें, इसी में हमारे शिष्यत्व की सार्थकता है। हम सब प्रस्तुत गुरुपूर्णिमा पर्व पर अपनी गुरुसत्ता को यह सार्थक श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकते हैं। गुरुदेव-माताजी हर पल हमारे साथ हैं, उनके अनुदान हमें सतत मिलते रहेंगे, प्रगति पथ पर हमें निरंतर बढ़ाते रहेंगे यह विश्वास हमारे मनों में हर पल बढ़ता ही जाना चाहिए।

आस्था संकट-सबसे बड़ी चुनौती

परम पूज्य गुरुदेव ने आस्था संकट को इस युग की सबसे बड़ी चुनौती कहा है। उनका "मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण" तभी साकार हो सकता है जब जन-जन में अपने सृजेता की सामर्थ्य, अपनी क्षमताओं, उच्च आदर्श, जीवन के अनुशासन के प्रति आस्था जाग जाये। आज लोग पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान, कथा-प्रवचन करते, सुनते तो पहले से कहीं ज्यादा दिखाई देते हैं, लेकिन जनआस्थाओं को अभीष्ट दिशा देते दिखाई नहीं पड़ते। धर्म व्यवसाय बनता जा रहा है, तीर्थ पर्यटन के केन्द्र बनते जा रहे हैं, भक्तगण अपने लोभ, मोह, अहंकार की पूर्ति के लिए सस्ते चढ़ावों से भगवान को रिझाने के गोरखधंधे में व्यस्त दिखाई देते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि यदि जनआस्थाओं को सही दिशा दी जा सके तो लोगों में 'जियो और जीने दो' की प्रवृत्ति जाग जाये। लोग भ्रम-भ्रांतियों से उबरें और अपने कर्म को पवित्र बनाने व कौशल को बढ़ाने में जुट जायें। श्रम और सहकारिता का सम्मान होने लगे तो भारतवर्ष को फिर से सोने की चिड़िया बनते देर नहीं लगेगी। अनगढ़ आकांक्षाएँ तो कुबेर भी अपना सारा धन लुटाकर पूरी नहीं कर सकते, लेकिन मनुष्य को भगवान ने इतनी सामर्थ्य दी है कि यदि वह उनका सही-सही उपयोग करे तो अपने साथ अनेकों का भला कर सकता है। यह विश्वास हमें जन-जन में जगाना होगा। यदि यह विश्वास जाग जाये तो स्वार्थ-संकीर्णताओं के बंधन टूटते नज़र आएँगे। फिर कोई क्यों भय, आतंक, भ्रष्टाचार, अनाचार का सहारा लेकर समाज में अव्यवस्थाएँ उत्पन्न करेगा?

हमारा युगधर्म-आत्मीयता विस्तार

हमारा मिशन और हमारा जीवन आस्था संकट के निवारण के लिए अधिक से अधिक समर्पित होना चाहिए। यदि हमारे स्वयं के मनों में यह आस्था प्रबल होने लगे तो युग निर्माण की दिशा में साहसी कदम स्वयं बढ़ते चले जाएँगे। यदि इस दिशा में हमारे संकल्प उभरते हैं तो गुरुपूर्णिमा पर्व पर पावन गुरुसत्ता को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आस्था संकट का निवारण उन्हीं सूत्रों के सहारे संभव है जो हमारी गुरुसत्ता ने अपनाए और हमें अपना बना लिया। श्रेष्ठता के प्रति लोगों की श्रद्धा और विश्वास बढ़ाने के लिए हमें घर-घर जाना होगा। अपने प्यार और आत्मीयता के सहारे उनका विश्वास जीतना होगा। प्यार ही वह पूँजी है जिसे लुटाकर गुरुदेव-माताजी ने करोड़ों लोगों का जीवन बदल दिया। एक विराट देव परिवार खड़ा कर दिया। आज के हताशा-निराशा भरे जीवन में प्यार वह संजीवनी है जिसकी तलाश हर किसी को है। आत्मीयता विस्तार का नाम अध्यात्म है। परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं-

"आप सबको अपना मानना शुरू कीजिए। अपनेपन के दायरे को बढ़ा दीजिए। अभी तो आपके अपनेपन का दायरा शरीर तक है, इसलिए शरीर में सुख है, तो आप सुखी हैं, शरीर में दुःख है तो दुःखी हैं। अभी तो आपने अपना दायरा अपने कुटुंब तक सीमित रखा है। कुटुंबियों को अच्छी नौकरी मिल गई, खाना मिल गया, इज्जत मिल गई, तो आप खुश हैं और अगर नुकसान हो गया तो आप नाखुश हैं। अतः आप एक काम कीजिए, अपने इस छोटे से दायरे को बढ़ा दीजिए। आप अपने आप को सारे विश्व तक फैला दीजिए, तब सारी चीजें आपकी हो जाएँगी।

प्यार का वास्तविक स्वरूप सेवा में निखरता है। जिसको आप प्यार करते हैं, उसकी आप सेवा करना चाहते हैं। प्यार अपने प्यारे को सुखी बनाने के लिए स्वयं कष्ट उठाता है और सामने वाले प्रेमी को सुखी बनाता है।"

पावन गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए आत्मीयता विस्तार की ही सबसे बड़ी आवश्यकता है। हम अपने पड़ौसियों के, रिश्तेदारों के या जो भी हमारे संपर्क में आते हैं उनके सुख-दुःख के साझेदार बनते चले जायें, उनके कष्ट-कठिनाइयों का समाधान सुझाते चले जायें, तभी हम उनका विश्वास जीत सकते हैं। हम कहें ही नहीं, उनकी सुनें भी और उनकी समस्याओं का समाधान करते हुए उनमें एक नया आत्मविश्वास जगायें। हमारी भाव-संवेदना और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को साथ लेकर घर-घर पहुँचेंगे तो निश्चित ही विचार क्रान्ति की एक नई लहर पैदा होती चली जाएगी।

सेवा के पथ में फूल ही नहीं, शूल भी भरपूर मिलते हैं। लेकिन हमें 'नेकी कर दरिया में डाल' की नीति अपनानी होगी। आत्मीयता विस्तार तो एक साधना है। हमें इसे गुरुकार्य मानकर करना चाहिए। श्रेय, सफलता, यश-अपयश सब अपने इष्ट के-आराध्य के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। अर्जुन की तरह फल की इच्छा न रखते हुए हम केवल अपने कर्त्तव्यों का पालन करते चलें। स्वयं योगेश्वर कृष्ण हमारे पथ-प्रदर्शक हैं। उनके दिशा-निर्देशों का पालन करते रहे तो युग के इस महाभारत में विजय देवत्व की ही होगी, यह सुनिश्चित है।

18 लाख परिवारों में देवस्थापना के मायने

इस वर्ष के आरम्भ में अखिल विश्व गायत्री परिवार ने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती और महाकुम्भ हरिद्वार के उपलक्ष्य में पूरे देश में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान चलाया। आत्मीयता विस्तार का एक अभूतपूर्व अध्याय लिखा गया। 18 लाख से अधिक नए घरों में देवस्थापनाएँ हुईं। इसे सही मायनों में देवस्थापना, गंगाजली और युगशक्ति गायत्री के परिचयात्मक साहित्य की स्थापना के माध्यम से नए घरों में युग निर्माणी आस्थाओं का बीजारोपण कहा जा सकता है।

यह देवस्थापनाएँ अभियान की इति नहीं, आरंभ है। हमारा लक्ष्य है उन परिवारों में देवत्व का विकास-विस्तार, युग निर्माणी आस्थाओं का अभिवर्धन। यह आत्मीयता विस्तार से ही संभव है, जिसके लिए उनसे सतत सम्पर्क ज़रूरी है।

जिन परिवारों में देवस्थापना हुई है, हमें उनके दुःख-सुख में भागीदार होना चाहिए। केवल कहना ही नहीं, धैर्यपूर्वक उनकी बातों को सुनने और उनकी मनोभूमि में युगनिर्माणी आस्थाओं का बीजारोपण करने की आवश्यकता है। जब तक हम गुरुसत्ता के जीवन-आदर्शों पर चलते हुए इन परिवारों में प्यार और आत्मीयता की प्रतिष्ठा नहीं करते, श्रेष्ठता और आदर्शों के प्रति उनका उत्साह नहीं जगाते, गुरुसत्ता के संरक्षण-अनुदानों के प्रति विश्वास नहीं जगाते, तब तक हमारे प्रयास अधूरे ही रहेंगे। हमें इन नए परिवारों के सतत संपर्क में तब तक रहने की आवश्यकता है जब तक कि -

- उनमें नियमित गायत्री उपासना का क्रम आरम्भ नहीं हो जाता।
- उन्हें अखण्ड ज्योति या मिशन की किसी पत्रिका का पाठक नहीं बना लिया जाता।
- परिवार में यज्ञ-संस्कारों की परम्परा का शुभारम्भ नहीं हो जाता।
- युग निर्माण आन्दोलन में उनका सक्रिय सहयोग नहीं मिलने लग जाता।

एक उत्तम सहयोगी-प्रज्ञा अभियान

नए घरों में सतत सम्पर्क के लिए और उन्हें पूज्य गुरुदेव के विचार तथा अपने मिशन को समझाने के लिए प्रज्ञा अभियान एक उत्तम माध्यम बन सकता है। सभी शाखा, शक्तिपीठ, संगठनों से अनुरोध है कि वे प्रसाद स्वरूप अथवा अनुदान स्वरूप प्रज्ञा अभियान लेकर हर 15 दिन में उनके पास अवश्य पहुँचें।

प्रकृति के अनुरूप जीवन अपनायें और राष्ट्र की समृद्धि में करें सहयोग

प्राकृतिक खेती के लिए आनलाइन संगोष्ठी

रायपुर। छत्तीसगढ़

प्रकृति बचेगी, तो जीवन बचेगा। प्रकृति से ही समस्त जीव को प्राण मिलता है। परम पूज्य गुरुदेव ने प्रारंभ से प्रकृति के अनुरूप जीवन शैली अपनाया और वे इसके लिए सदैव सभी को प्रेरित करते रहे। आज की विकट समस्याओं को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति की रक्षा करने के लिए आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए। इसी उद्देश्य से देवसंस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज के तत्त्वावधान में 30 जून को आनलाइन किसान संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश सहित कई राज्यों के किसान वर्चुअल जुड़कर प्राकृतिक खेती एवं उसके लाभ से लाभान्वित हुए।

इस आनलाइन संगोष्ठी का शुभारंभ केन्द्रीय जोनल समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने किसान भाइयों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया।

इस संगोष्ठी में किसानों को विष मुक्त व पौष्टिक भोजन के लिए, कृषि कार्य में सीमित श्रमिकों से अधिक उत्पादन, निरंतर कम हो रहे उत्पादन की वजह भूमि में उर्वरा शक्ति, प्राकृतिक उपलब्ध संसाधनों से कृषक द्वारा स्वयं खाद व दवाओं का कम लागत में निर्माण, विभिन्न जीव जंतुओं से फसल के नुकसान को बचाने के विविध उपायों की जानकारी दी गयी। इस अवसर पर देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रो. आर. के. गुप्ता, इंजी. डी.पी. सिह, इंजी. योगेन्द्र गिरि ने प्राकृतिक खेती एवं उससे संबंधित विषयों के प्रकार एवं लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में जैविक कृषि, गोपालन, ग्रामीण स्वावलंबन और जल प्रबंधन ऐसे विषय हैं, जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। तीनों विषयों को एक साथ समग्र रूप से देखा जाता है। जैविक खाद से भूमि की भौतिक, रासायनिक एवं बायोलाजिकल गुणवत्ता में भी अत्यधिक सुधार होता है। किसानों को कीटनाशक और रासायनिक खाद खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती है। इससे किसानों पर आर्थिक बोझ कम पड़ता है। रासायनिक खाद के इस्तेमाल से शुरू मे फसलों का उत्पादन बढ़ता है, लेकिन कुछ समय बाद मिट्टी में नाइट्रोजन का स्तर कम हो जाता है और फसलों की पैदावार घट जाती है। वक्ताओं ने किसानों को एकत्रित कर उनको बीज उगाने, गौपालन, गाय के गोबर से खाद बनाने के लिए प्रेरित करने की बात कही।

कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री शुकदेव निर्मलकर व सहयोगी भाइयों ने की। इस अवसर पर गायत्री परिवार छत्तीसढ़ के श्री दिलीप पाणिग्रही, श्री लच्छूराम निषाद, सहित कृषि वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ, विद्यार्थी आदि की उपस्थिति रही।

समाज को भावसंवेदनाओं की आवश्यकता

वर्तमान समय में विषैले वातावरण के प्रभाव से प्रकृति कुपित होती हुई चली जा रही है। हवा,जिस पर हमारा जीवन निर्भर है वह आज श्वांस लेने लायक नहीं रही। जल लगभग पूरी तरह से प्रदूषित है। ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं। धरती अन्न उपजाने से मना कर रही है, अब हमें फिर से जैविक कृषि की ओर लौटने की आवश्यकता है। आज जो बारिश हो रही है वो सारी की सारी अम्लीय हो रही है, इस कारण ईमारतों की आयु तीन गुना कम हो रही है और इससे इंसान की आयु काफी प्रभावित होगी। इसे ठीक करने के लिए वातावरण को बदलने की आवश्यकता है। मनुष्य के विचारों को, सोचने के तरीकों को बदलने की आवश्यकता है। आज समाज को भावसंवेदनाओं की आवश्यकता है, सद्भावना हो जायेगी तो प्रकृति का दोहन कम होगा।

-डॉ. चिन्मय पण्ड्या,
प्रतिकुलपति, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय

प्रकृति का संरक्षण आवश्यक

भारतीय संस्कृति में जड़ी-बूटी, औषधि का प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आया है। लोग इसका पालन करते थे और निरोग रहते थे। आज समय के साथ धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है, लोग प्रकृति से दूर जा रहे हैं, फलतः विभिन्न प्रकार के आधि-व्याधियों से जूझ रहे हैं। आज गायत्री परिवार बच्चों को संस्कार विकसित कर रहे हैं वह सराहनीय है। मैं गायत्री परिवार से जुड़ी हुई हूँ, उनका साहित्य पढ़ती हूँ, उनका ध्यान करने मात्र से समस्याओं का समाधान होता है। मेरा बचपन प्रकृति के साथ बीता और आज भी प्रकृति के संरक्षण में किये जा रहे अनेक कार्यो से सीधे तौर पर जुड़ी हूँ।

- माननीया सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल, छत्तीसगढ़

जैविक खेती ही करें

इन दिनों किसान भाइयों द्वारा रासायनिक खादों, कीटनाशक दवाइयों के अत्यधिक प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है। भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाये रखना है, तो हमें जैविक खेती की ओर लौटना होगा। जैविक खेती से उपजे अन्न स्वास्थ्य के लिए उत्तम होते है।

-डॉ. कृष्ण कुमार साहू, कृषि वैज्ञानिक,
इंदिरा गांधी, कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर

छत्तीसगढ़ में नशा उन्मूलन के लिए चलाये जा रहे विविध आयोजन

रायपुर। छत्तीसगढ़

नशा नाश की जड़ है भाई, फल इसका अतिशय दुखदाई। इस उक्ति से हर पीड़ित परिवार भलीभांति अवगत है। नशा करने वाला परिवार, समाज के लिए घुन की तरह है। इस बात से युगऋषि पूज्य गुरुदेव भी बहुत चिंतित रहा करते थे। उन्होंने नशा उन्मूलन के लिए विविध रचनात्मक गतिविधियाँ चलवाई थी।

इस दिशा में गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ के परिजनों ने नशा मुक्त छत्तीसगढ़ अभियान चलाया है। इसके अंतर्गत राज्य के रायपुर, बिलासपुर, धमतरी, बलौदाबाजार, जांजगीर-चांपा, दुर्ग, राजनांदगांव आदि जिलों के परिजनों ने अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोध दिवस (26 जून) के दिन जनजागरण रैलियाँ निकालीं। स्थान-स्थान पर प्रदर्शनी लगाई गयीं। आनलाइन संगोष्ठियाँ आयोजित हुईं। नशा से लोगों को बचाने हेतु विविध गतिविधियाँ संचालित की गयीं। इसमें जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन के अनेक अधिकारियों ने भागीदारी करते हुए नशा से बचने के लिए आत्मबल बढ़ाने, नशा से होने वाले दुष्प्रभावों-बीमारियों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ जोन के प्रांतीय समन्वयक श्री दिलीप पाणिग्रही की अगुवाई में जिला समन्वयकों ने माननीया राज्यपाल एवं राज्य सरकार के नाम जिलाधिकारियों एवं उपजिलाधिकारियों को नौ सूत्रीय योजनाओं का ज्ञापन सौंपा।

बिलासपुर में श्रीमती नंदिनी, श्री सी.पी.साहू, रायपुर में श्री दिलीप पाणिग्रही, जांजगीर चांपा में जिला समन्वयक श्री बिहारी ताम्रकार, धमतरी में श्री दिलीप नाग आदि के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के गायत्री परिवार की टीम नशा मुक्त समाज के लिए जुटी है।

दुर्ग में ज्ञापन सौंपते परिजन, प्रदर्शन निहारते लोग,अधिकारीओं को नशा मुक्ति अभियान की जानकारी देते परिजन

यज्ञ के साथ मनाई गायत्री जयंती, पक्षियों हेतु लगाये 200 जल पात्र

अरणियाली-बाड़मेर। राजस्थान

5 जून, पर्यावरण दिवस पर पाक सीमा के निकटतम गाँव अरणियाली जिला बाड़मेर, राजस्थान के प्रज्ञा मंडल अरणियाली द्वारा पक्षियों के जल पीने हेतु एक दिन में 200 परिंडे (जल पात्र) लगाये गये। भीषण गर्मी के मौसम में जल की खोज में पक्षियों को भटकना पड़ता है, उनकी मृत्यु तक हो जाती है। ऐसे में उनके लिये घरों की छत पर, बालकनी में, वृक्षों पर जल पात्र रखना व टाँगना चाहिये। उन्हें नियमित रूप से जल से भरते भी रहना चाहिये। इससे न केवल पक्षियों के प्राणों की रक्षा होती है, बल्कि पर्यावरण का भी संरक्षण होता है। नेहरू युवा केन्द्र बाड़मेर के युवा अधिकारी सचिन पटोदिया की प्रेरणा व मुकेश ओमप्रकाश शर्मा के योगदान से धोरीमन्ना ब्लॉक में यह पुनीत कार्य किया गया। 20 जून को प्रज्ञा मंडल अरणियाली द्वारा गंगा दशहरा एवं गायत्री जयंति पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रज्ञा मंडल प्रमुख चंदनराम सेन, सिमरनाथराम सेवदा, रावतराम डोगियाल, भंवरलाल सेवदा, भाखाराम सोनी व कई महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन मुकेश शर्मा ने किया।

गायत्री परिवार ने किया पौधारोपण

बगोदर-झारखण्ड

गायत्री परिवार बगोदर इकाई ने पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कई फलदार पौधे लगाये। इस दौरान गायत्री परिवार के प्रखंड संयोजक संजय विभूति ने कहा कि कोरोना संक्रमण के दौरान संक्रमित लोग ऑक्सीजन की कमी की समस्या से परेशान रहे, आकस्मिक दुःखद घटनाओं का सामना करना पडा, इसलिए हमें सतर्क हो जाने की जरूरत है। हम सभी अपने जीवन काल में प्रतिवर्ष एक पौधा लगाकर उसकी सुरक्षा करें। इससे पर्यावरण संतुलन बना रहेगा। उन्होंने आंवला, अमरूद, शीशम, गुलाब समेत अन्य फूलों का पौधा लगाया। कार्यक्रम में बासुदेव साव, अरूण पांडेय, नागेश्वर महतो, तपेश्वर महतो, मनीष राज, तुलसी ठाकुर, अनीता देवी, किरण देवी आदि मौजूद थे।

अपनी गलतियों को ढूँढना, अपनी बुरी आदतों को समझना, अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं को अनुभव करना और उन्हें सुधारने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहना यही जीवन संग्राम है। पं.श्रीराम शर्मा आचार्य

आंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून

योगाचार्य ने छात्र-छात्राओं को योग के इतिहास एवं महत्त्व की जानकारी दी

राजनांदगांव छत्तीसगढ़।

गायत्री विद्यापीठ केशर नगर, राजनांदगांव में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं को योगाचार्य सुश्री भारती यादव ने योग के इतिहास एवं एवं महत्त्व की विस्तृत जानकारी दी।

शिक्षिका सुश्री उषा झा ने बताया कि विद्यापीठ में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा उनके व्यक्तित्व विकास के लिए विविध कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। योग, ध्यान आदि का भी नियमित रूप से अभ्यास कराया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंद किशोर सुरजन, सचिव श्री हरीश गांधी, मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सूर्यकांत चितलांग्या, प्राचार्य सुश्री वत्सला अय्यर आदि ने भी विद्यार्थियों को नियमित योग करने के लिए प्रेरित किया।

चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

न्यू इंडिया कन्वेंट हाई स्कूल, चन्द्रपुर में गायत्री परिवार के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। समारोह की शुरुआत 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' प्रार्थना से हुई। इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न संस्थानों के प्रतिनिधियों सहित विद्यार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय मानक एवं प्रज्ञायोग का अभ्यास कराया गया। सभी ने पूर्ण मनोयोग के साथ योग, ध्यान एवं आसन का अभ्यास करते हुए अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल करने के लिए संकल्प लिया।

चन्द्रपुर महानगरपालिका की महापौर सुश्री राखी ताई कंचरलावार, डॉ. मंगेश गुलवाडे आदि ने भी योग दिवस पर अपने विचार प्रकट किये। अतिथियों ने योग को बढ़ावा देने वाले कार्यकर्त्ताओं को श्रीफल, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर न्यू इंडिया कन्वेंट हाई स्कूल के संचालक श्री आशीष धीर, पतंजलि योगपीठ की सुश्री सुनीता श्रीगड़ीवार, श्री प्रशांत तुंगीदवार, निर्मला माता देवी आध्यात्मिक संस्थान के श्री राहुल वांधेरे आदि की उपस्थिति प्रमुख रूप से रही।

कमलापुर, सीतापुर उत्तर प्रदेश।

सीतापुर जनपद के कमलापुर में गायत्री परिवार के सौजन्य से विश्व योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कमलापुर के प्रबंध ट्रस्टी योगाचार्य श्री ललित दीक्षित ने अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर योगाभ्यास कराया। साथ ही **''घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग''** अभियान के अंतर्गत प्रज्ञायोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान कुंवर दिनकर प्रताप सिंह जी को आपके द्वार पहुंचा हरिद्वार योजना के अंतर्गत गंगाजली एवं युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि कसमंडा के कुंवर साहब अध्यात्म क्षेत्र के विज्ञजनों में से एक हैं।

योग दिवस के दिन एक सौ पचास घरों में देवस्थापना के साथ युगऋषि द्वारा रचित साहित्य भेंट किया गया। इस अवसर पर आरएसएस के विभाग प्रचारक श्री अवधेश शुक्ला, समाजसेवी श्री प्रेमशंकर दीक्षित, जिला पंचायत सदस्य श्री दीपक शुक्ला आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय योग प्रशिक्षकों ने कराया योग

भोपाल, मध्यप्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ एवं मोक्ष योग स्टूडियो भोपाल ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व योग सप्ताह मनाया। प्रतिदिन योग से संबंधित विषयों पर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान दिये गये।

युवा प्रकोष्ठ के श्री रमेश नागर के अनुसार योग सप्ताह मनाने का उद्देश्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन और आम जनमानस में योग के संबंध में जन जागृति लाना है। कार्यक्रम में श्री संजय रावत-वियतनाम से, श्री लोमष चन्द्राकर-रायपुर, श्री राहुल सैनी-वियतनाम, श्री जयप्रकाश-लखनऊ, मेघा रोहिल्ला-आयुष विभाग, श्वेता चौधरी-देवसंस्कृति विश्वविद्यालय तथा श्री अरविन्द जी- मोक्ष योग आदि योगाचार्यों ने प्रशिक्षुओं को योग के व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक पक्ष को विस्तार से बताया। इस अवसर पर युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय संयोजक श्री अमर जी ने सभी का आभार प्रकट किया।

विश्व योग दिवस : भोपाल में योग से संबंधित विषयों पर ज्ञान प्राप्त करते प्रशिक्षु

गायत्री परिवार और जिला जेल प्रबंधन के समन्वय से मना योग दिवस

देवास, मध्यप्रदेश।

गायत्री शक्तिपीठ देवास एवं जिला जेल प्रबंधन के संयुक्त तत्त्वावधान में कैदियों के बीच शारीरिक एवं मानसिक स्तर में सुधार के लिए सात दिवसीय योग शिविर का आयोजन हुआ, जो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के साथ सम्पन्न हुआ।

योग शिविर का शुभारंभ जेल अधीक्षक श्री रमेश आर्य ने दीपक प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि कैदियों के लिए सुधार एवं आत्मिक विकास हेतु चलाये जा रहे रचनात्मक कार्यक्रम में गायत्री परिवार का सहयोग सराहनीय है। गायत्री परिवार के योगाचार्यों द्वारा कराये आसन, योग आदि के अभ्यास से कैदियों में वैचारिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। युवा प्रकोष्ठ के जिला संयोजक श्री प्रमोद निहाले ने बताया कि योग के साथ हमारी जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव जरूरी है। योग शिविर में माइग्रेन, सिर दर्द सहित रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले विशेष योगासानों एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया गया।

योग शिविर में अनेक कैदियों ने अपनी अनुभूतियाँ प्रकट करते हुए कहा कि गायत्री परिवार के भाइयों द्वारा सिखाये गये योग से हमें शारीरिक परेशानियों से छुटकारा मिला है। उनके द्वारा दिये साहित्यों का अध्ययन करने से गलत और सही का अंतर समझ में आया है। जेल में सीखे योग एवं युग साहित्य को नियमित रूप से व्यवहारिक जीवन में अपनाने के लिए संकल्प लिया।

अंतिम दिन जेल अधीक्षक श्री रमेश आर्य ने गायत्री परिवार की उपस्थिति में जेल परिसर में पौधारोपण भी किया। इस अवसर पर सर्वश्री विक्रम चौधरी, विकास गिरी, प्रहलाद सोलंकी आदि का सक्रिय योगदान रहा।

विश्व योग दिवस : देवास में योग कराते योगाचार्य एवं योग करते देवास के परिजन

योग दिवस पर योग से निरोग के दिये सूत्र

बगोदर, गिरीडीह झारखण्ड।

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र श्री रंजीत कुमार ने बगोदर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास कराया। इस अवसर पर उन्होंने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से मिले ज्ञान को संजीवनी की उपमा देते हुए उपस्थित लोगों को दैनिक जीवन में योग ध्यान को नियमित रूप से अपनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर ''घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग'' अभियान के अंतर्गत चलाये जा रहे योजनाओं से जन-जन को जोड़ने के लिए आवाहन किया।

पूर्व विधायक श्री नागेन्द्र महतो, गायत्री परिवार के प्रखंड संयोजक श्री संजय विभूति ने कहा कि स्वस्थ शरीर के निर्माण के लिए योगा को जीवन में अपनाने की जरूरत है। प्रत्येक दिन सभी को कम से कम आधा घंटा योगाभ्यास के लिए निकालना चाहिए।

इस अवसर पर योगाभ्यास के बाद कोविड-19 में असमय काल कवलित हुए मृत आत्माओं की शांति एवं सद्गति के लिए मौन श्रद्धांजलि दी। सर्वश्री जगदीश मेहता, प्रो. प्रशांत कुमार, बीएड कॉलेज के सचिव श्री कमलदेव विष्ट, स्थानीय सांसद प्रतिनिधि श्री छोटेलाल यादव तथा अनेक बुद्धिजीवियों सहित रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज आफ एजुकेशन के शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने भागीदारी की।

योग दिवस में बहिनों ने बढ़ चढ़कर लिया भाग

गिरीडीह, झारखण्ड।

गिरीडीह जनपद के तिसरी प्रखंड के सुदूर ग्रामीण इलाकों में गायत्री परिवार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस वर्ष योग दिवस के अवसर पर बहिनों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला।

इस अवसर पर तिसरी के थानसिंहडीह पंचायत के ग्राम लपडियार में सामूहिक रूप से योगाभ्यास किया गया। बहिनों ने भाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर घर घर पहुंचे प्रज्ञायोग, अपना देश बनेगा निरोग अभियान के अंतर्गत पूरे मंडल में योग प्राणायाम ध्यान गायत्री मंत्र की उपासना अंकुरित अनाज का सेवन वाटर थेरेपी, उषापान जैसे विषयों को जीवन में अपनाने एवं युग निर्माण मिशन की गतिविधियों को जन जन तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हुए। सविता देवी, सुनीता देवी, प्रमिला देवी, रीना देवी, सरिता देवी, लक्ष्मी देवी आदि बहिनों ने अपने निकटवर्ती बहिनों को भी प्रज्ञायोग करने के लिए प्रेरित करने की बात कही। इस अवसर पर गायत्री परिवार के परिजनों की सक्रिय भूमिका रही।

विश्व योग दिवस : तिसरी प्रखंड में योग करती बहिने एवं भाई

प्रज्ञायोग को घर-घर पहुंचाने के लिए संकल्पित हुए युवा

टाटानगर, झारखण्ड।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के युवाओं ने बढ़-चढ़कर भागीदारी किया। इस अवसर पर घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग देश अपना बने निरोग अभियान के अंतर्गत प्रज्ञायोग को जन-जन तक पहुँचाने के लए संकल्पित हुए। योग दिवस के साथ पाँच दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ।

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र श्री रवि नेवार तथा सुश्री लक्ष्मी कुमारी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित योग तथा प्रज्ञायोग का अभ्यास कराया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग का ज्यादा से ज्यादा लाभ लेना है, तो अपने आहार-विहार को संतुलित करना चाहिए। युवाओं को पूरे राज्य में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाने हेतु प्रेरित किए। इस हेतु सरकारी एवं गैरसरकारी चिकित्सकों से संपर्क कर गायत्री परिवार के पीड़ा निवारण कार्यक्रम में सहयोग करने के लिए तैयार किया जायेगा।

दिया(DIYA) ग्रुप के भाई-बहिनों ने भी युवा प्रकोष्ठ के साथ समन्वय स्थापित कर प्रज्ञायोग एवं युग निर्माण मिशन के सूत्रों को व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करने के लिए संकल्पित हुए। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के समन्वयक सर्वश्री संतोष कुमार, नीलांचल, अंकित वर्मा, दीपक कुमार, सुश्री स्मृति, श्वेता, श्रेया आदि की विशेष भूमिका रही।

योग दिवस से कानपुर देहात में जागा उत्साह

कानपुर, उत्तरप्रदेश।

कानपुर देहात में अखिल विश्व गायत्री परिवार के सौजन्य से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गायत्री परिवार के युवाओं ने अकबरपुर तहसील में 133, भोगनीपुर में 15, सिकंदरा में 13, बैरापुर में 3, रसूलाबाद में 25, मैथा में 3 स्थानों मे योग दिवस सम्पन्न कराया। सभी स्थानों पर अंतर्राष्ट्रीय मानकों के आधार पर योग तथा शांतिकुंज द्वारा निर्धारित प्रज्ञायोग का अभ्यास कराया। इस अवसर पर युवाओं को युग निर्माण मिशन एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी। जिला समन्वयक श्री विशन सिंह ने सभी का आभार प्रकट किया।

विश्व योग दिवस : कानपुर देहात के विभिन्न स्थानों पर योग करते स्थानीय परिजन

जिस प्रकार पानी और साबुन की सहायता से कपड़े का मैल छूटता है उसी प्रकार मन पर जमे हुए मलीनता के परतों की सफाई सद्ज्ञान और सत्कर्म के आधार पर होती है।

''घर घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग'' अभियान से जुड़ रहे युवा

लखीमपुर खीरी, उत्तरप्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश के संयोजन में शांतिकुंज हरिद्वार के सप्त सूत्रीय आंदोलन में सम्मिलित स्वास्थ्य संवर्धन अभियान के अंतर्गत प्रज्ञायोग अभियान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से ऑनलाइन साप्ताहिक प्रज्ञायोग अभ्यास कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

गायत्री जयंती से आरंभ हुए इस अभियान में जनपद लखीमपुर खीरी के गायत्री शक्तिपीठ लखीमपुर, गायत्री शक्तिपीठ निघासन और पलिया के निघासन रोड स्थित दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर बोझवा के सामूहिक आयोजनों के साथ बड़ी संख्या में लोगों ने अपने-अपने घरों से ऑनलाइन जुड़कर प्रज्ञायोग का अभ्यास किया।

आनलाइन प्रज्ञायोग कराते योगाचार्य

युवा प्रकोष्ठ के श्री अनुराग मौर्य ने बताया लखीमपुर, लखनऊ, सुल्तानपुर, रामपुर, शाहजहांपुर, कानपुर, बहराइच, बलरामपुर तथा अयोध्या जनपद से विभिन्न योग शिक्षकों ने ऑफलाइन प्रज्ञायोग का अभ्यास भी करवाया। ऑनलाइन प्रज्ञायोग का संचालन योगाचार्य श्री निकेत सिंह ने किया।

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री प्रभाकर सक्सेना के अनुसार प्रज्ञायोग अभ्यास के अभियान हेतु देव संस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज से प्रशिक्षित योग शिक्षकों की युवा टीम जुटी है।

वैश्विक संकट के निवारणार्थ हुए गायत्री साधना की पूर्णाहुति

धमतरी, छत्तीसगढ़

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज द्वारा वैश्विक महामारी के समूल नाश के लिए चलाये जा रहे गायत्री साधना यज्ञ अभियान में संपूर्ण विश्व भर के परिजन जुटे हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि गायत्री मंत्र में अपार शक्ति है। गायत्री महामंत्र की मनायोगपूर्वक की गयी साधना से मनोवांछित फल मिलता है।

जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग के अनुसार कोरोना संकट से निजात पाने के उद्देश्य से धमतरी के विभिन्न शाखाओं से 691 साधक विगत जून 2020 से गायत्री साधना में जुटे रहे। गायत्री जयंती के पावन अवसर पर इस अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, अपना देश बने निरोग सहित विभिन्न रचनात्मक अभियानों को गति देने के संकल्प उभरे।

गायत्री साधना की पूर्णाहुति करते परिजन

गायत्री मंत्र लेखन के लिए युवा हो रहे प्रेरित

शाहजहांपुर, उत्तरप्रदेश

शाहजहांपुर की बहिन सुश्री अश्विता सेठ की सक्रियता से जिला जेल के कैदियों ने गायत्री मंत्र लेखन प्रारंभ किया है। इस कार्य में जेल अधीक्षक के सहयोग ने सुश्री अश्विता बहिन के मनोबल को बढ़ा दिया है। जिला जेल के कैदी भाई-बहिन के विचारों में सकारात्मक परिवर्तन से प्रशासन, कैदियों के परिवारीजन के साथ गायत्री परिवार के परिजन भी प्रसन्न हैं।

गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मस्थली बंडा के साथ मिलकर वे गायत्री मंत्र लेखन अभियान को जिले भर के जेलों तक पहुंचाने की योजना पर काम कर रही हैं। अब तक जिला जेल में पांच हजार से अधिक गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ, गायत्री चालीसा एवं युग साहित्य कैदियों तक पहुंचा चुकी हैं।

मंत्रलेखन बुक जमा कराती सुश्री अश्विता सेठ

सुश्री अश्विता सेठ ने बताया कि श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी की मिली प्रेरणा से यह कार्य कर पा रही हूँ।

गायत्री जयंती पर जरूरतमंदों के लिए युवाओं ने किया रक्तदान

श्रावस्ती, उत्तरप्रदेश

शांतिकुंज के पीड़ा निवारण अभियान के अंतर्गत गायत्री जयंती के पावन अवसर पर युवा प्रकोष्ठ श्रावस्ती के युवाओं ने जरूरतमंदों के लिए रक्तदान किया। अनेक परिजनों द्वारा दिये गये रक्त को जिला चिकित्सालय श्रावस्ती की टीम अपने साथ लेकर गयी। यह रक्त गरीब जरूरतमंदों के उपयोगार्थ होगा।

पर्व के अवसर पर अयोजित 12 घंटे के अखण्ड जप में कोरोना महामारी से निजात पाने एवं असमय काल कवलित हुए परिजनों की आत्मा की शांति हेतु पावन गुरुसत्ता से प्रार्थना की गयी। पर्व को उत्साह के साथ मनाने के पश्चात युगऋषि के विचारों एवं घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग सहित विभिन्न अभियानों को गति देने के लिए संकल्प उभरे। इस अवसर पर सर्वश्री विजय सोनी, राज प्रकाश सोनी, धनीराम वर्मा, सिपाही लाल, विद्याभूषण सोनी आदि का सक्रिय योगदान रहा।

रक्तदान करते स्थानीय युवा परिजन

मंत्र लेखन पुस्तिका व युग साहित्य पहुंचा रहे परिजन

पटियाला, पंजाब

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि जो मुझसे प्यार करते हैं, वे मेरे साहित्य का अध्ययन करें और अधिक से अधिक विस्तार करें। इन साहित्यों में समस्त समस्याओं के समाधान निहित है। उनके इन्हीं जीवन सूत्र को अपनाते हुए गायत्री परिवार पाटियाला ने युग साहित्य के विस्तार के साथ घर-घर देवस्थापना करा रहे हैं। नित नये घरों, व्यक्तियों तक युग निर्माण की विचारधारा को पहुंचाने में आशातीत सफलता मिल रही हैं। स्थानीय परिजनों में युग साहित्य पढ़कर समस्याओं का समाधान निकाल रहे हैं। लोगों का कहना है कि युगऋषि पूज्य गुरुदेव के साहित्य में समस्याओं का समाधान लिखा है। आवश्यकता इस बात की है कि वे उसका अध्ययन करें और समुचित ढंग से उसका अनुपालन करें। साथ ही कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु सामूहिक साधना में परिजन बढ़-चढ़कर भागीदारी कर रहे हैं।

सामूहिक यज्ञ में भाग लेते पटियाला के परिजन

योग से बढ़ती है रोग प्रतिरोधक क्षमता - प्रताप सिंह

सीतापुर-उत्तर प्रदेश

सीतापुर उ.प्र. गायत्री परिवार, कमलापुर शाखा व समृद्धि भारत सेवा संस्थान द्वारा कमलापुर राधा कृष्ण मंदिर में योग शिविर का आयोजन किया गया। जिला पंचायत सदस्य दीपक शुक्ला, समाजसेवी श्री प्रेम शंकर दीक्षित, आरएसएस के विभाग प्रचारक श्री अवधेश शुक्ला, आशुतोष मिश्रा सहित अनेकों परिजनों ने बड़े उत्साह के साथ भारी संख्या में भाग लिया। श्री ललित दीक्षित जी ने सभी को योग कराया। कसमंडा स्टेट के कुंवर दिनकर प्रताप सिंह ने नियमित योग करने की प्रेरणा देते हुये कहा कि भुजंगासन से फेफड़े मजबूत होते हैं व नियमित योग करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

इस अवसर पर राजा साहब को आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान के अंतर्गत गंगाजली व देवस्थापना किट देकर गायत्री मंत्र दुपट्टा भेंट किया गया व शांतिकुंज एवं श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य तीर्थ आने का निमंत्रण भी दिया गया। 150 घरों में देवस्थापना कराई गई, प्रसाद स्वरूप पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजा साहब ने लोगों से कहा, कि आयुर्वेद और योग विश्व को भारत ने दिया है और विश्व कल्याण का सबसे अच्छा मंत्र यही है। स्वस्थ रहने के लिये आप सब योग करें। ज्ञातव्य हो कि कसमंडा स्टेट के कुंवर साहब की रियासत उत्तर प्रदेश में अपना मुख्य स्थान रखती है और वह स्वयं एक आध्यात्मिक सुशिक्षित व्यक्तित्व के धनी हैं।

अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक दिवस पर जन जागरण अभियान

जबलपुर-मध्यप्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज द्वारा सप्त सूत्रीय कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, इसी के अंतर्गत एक अभियान नशा मुक्त भारत बनाने का है। जिसके तहत गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर द्वारा विगत सप्ताह में तहसील कुंडम एवं सिहोरा के 32 गांव में श्री धर्मेश्वर झाडेजी के नेतृत्व में नशा मुक्ति अभियान चलाकर 5000 से अधिक पंपलेट का वितरण किया गया। दीवार लेखन एवं ग्रामीणों की छोटी-छोटी सभा आयोजित कर उन्हें नशा मुक्त करने का संकल्प कराया गया एवं जीवन को शांति,शक्ति संपन्न बनाने हेतु गायत्री महामंत्र द्वारा सद्बुद्धि की प्रार्थना प्रतिदिन करने का संकल्प सभी ग्रामीणों को कराया गया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री वीरचन्द शर्मा, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

श्री वीरचन्द शर्मा 26 मई 2021 को कोरोना महामारी के कारण 67 वर्ष की आयु में पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्मचेतना के साथ एकाकार हो गए। सन् 1992 से मिशन से जुडे तथा गुरुजी के हर कार्यक्रम में हर प्रकार से सहयोग करते व भाग लेते थे।वह पिछले 31 वर्षों से मिशन की सेवा में संलग्न थे। वह डाकतार विभाग के निर्देशक के पद से सेवा निवृत्त हुए थे।

श्रीमती मुन्नीदेवी, गायत्री शक्तिपीठ, मझोला

गायत्री शक्तिपीठ मझोला के प्रबन्धक ट्रस्टी श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती मुन्नीदेवी श्रीवास्तव 17 अप्रैल 2021 को 72 वर्ष की आयु में गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गईं। गायत्री शक्तिपीठ की स्थापना 1980 में हुई थी, तब से उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण था। वह अंत तक गायत्री परिवार का मार्गदर्शन करती रही हैं।

श्री राजेन्द्र प्रसाद सोनी, बांसवाडा, राजस्थान।

गायत्री परिवार ट्रस्ट घाटोल के सहायक प्रबंध ट्रस्टी श्री राजेन्द्र कुमार सोनी 15 अप्रैल को पावन गुरुसत्ता में विलीन हो गये। वे 62 वर्ष के थे। उन्होने अपनी अल्पायु में गायत्री परिवार के उल्लेखनीय कार्य किया है।

श्री फिरतू राम साहू, दुर्ग, छत्तीसगढ़।

गायत्री प्रज्ञापीठ रानीतराई (पाटन) के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री फिरतूराम साहू 83 वर्ष की अवस्था में 29 मार्च को देहावसान हो गया। 1984 में पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद अपने क्षेत्र में युग निर्माण मिशन के कार्यों से जन-जन को जोड़ने में अथक परिश्रम किया। उन्होंने अपने सभी पुत्रों को मिशन के अनुरूप ही संस्कार देकर तैयार किया।

श्री कँवरलाल शर्मा, गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर,राजगढ़ व्यावरा (म.प्र.)

गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री कँवरलाल शर्मा का 72 वर्ष की आयु में 26 अप्रैल 2021 के दिन देहावसान हो गया। 01 मार्च 2007 से मिशन से जुड़े थे। वह मिशन के हर कार्य को उत्साह से करते थे। वे गायत्री यज्ञ, पत्रिकाओं का वितरण का कार्य भी संभालते थे।

विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से युगचेतना का हो रहा हैं विस्तार

गायत्री यज्ञ से एनसीआर के विभिन्न क्षेत्रों में वायुशोधन

दिल्ली-एनसीआर (राजधानी)

कोविड-19 ने मनुष्यों के विचारधारा से लेकर वायु में विकार भर दिया है। मनुष्य की चिकित्सा योग एवं प्राणायाम से संभव है। लेकिन वायु को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए यज्ञ ही एक मात्र माध्यम है। वायु प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से दिल्ली निवासी श्री अरुण शर्मा एवं उनकी टीम ने एक खुले वाहन को ही यज्ञशाला के रूप में तैयार किया है और वे नियमित रूप से प्रातः निर्धारित गली, मोहल्ला, सोसायटी में घूमकर यज्ञ कराते हैं। वहाँ के स्थानीय लोगों को भी आहुति डालने के लिए प्रेरित करते हैं। लोग उत्साहित हो, अपनी आहुतियाँ डालते हैं। यज्ञाहुतियाँ डालने के पश्चात परम पूज्य गुरुदेव के संदेश एवं साहित्य उन्हें भेंट करते हैं और उनसे निवेदन करते हैं कि कम से कम सप्ताह में एक दिन अपने-अपने घरों में यज्ञ करें। इसमें घर के सूक्ष्म वातावरण का परिशोधन होगा और घर-परिवार में खुशहाली आयेगी।

इस अभियान के संचालक श्री अरुण शर्मा बताते हैं कि हम लोग गायत्री यज्ञ के परिणाम से परिचित हैं। चाहते हैं कि कोविड-19 के कारण जो एनसीआर क्षेत्र के निवासी हैं, उन तक भी यज्ञ का लाभ पहुंचा सकें। इस हेतु एक खुले वाहन में चल गायत्री यज्ञ का क्रम नियमित रूप से चलाया जा रहा है। वे बताते हैं कि चल गायत्री यज्ञ वाहन को जिस क्षेत्र में लेकर जाते हैं, उसके एक दिन पहले सायंकाल सर्वे करते हैं, स्थानीय लोगों से चर्चा कर उन्हें हवन सामग्री आदि देते हैं। पश्चात अगले दिन प्रातः वाहन लेकर पहुंचते हैं, जहाँ वे उनसे यज्ञाहुतियाँ दिलवाते हैं। हम लोग राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में विगत चार माह से चल यज्ञ वाहन चला रहे हैं। अब तक हम लोगों को आशातीत सफलता मिली है। इस कार्य में सर्वश्री अरुण शर्मा, लक्ष्मण डबोला, शिवकुमार झा, सुधीर शर्मा, शुभम आर्या, मयंक एवं ऋषिपाल के उल्लेखनीय योगदान हैं।

खुले वाहन में गायत्री यज्ञ करते परिजन

ज्ञान विस्तार हेतु ज्ञान रथ का शुभारंभ

रायपुर, छत्तीसगढ़।

विचार क्रांति के प्रवर्तक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गायत्री शक्तिपीठ दावडा कालोनी, रायपुर में गायत्री जयंती के पावन अवसर पर ज्ञानरथ का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सुखदेव देवांगन ने बताया कि ज्ञानरथ के माध्यम से युगऋषि द्वारा रचित साहित्य के विस्तार को स्कूलों, कॉलेजों सहित गाँव-गाँव तक पहुंचाया जायेगा। इस अवसर पर श्री मनहरण सिंह, मोहन साहू, श्री प्रकाश दावड़ा, रामपाल तिवारी आदि मौजूद रहे।

ज्ञानरथ का शुभारंभ करते परिजन

गायत्री जयंती उत्साहपूर्वक मनी, लगाये पांच हजार पौधे

रांची, झारखण्ड।

गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर-2 धुर्वा में गायत्री जयंती का पर्व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बारह घंटे का अखण्ड जप रखा गया, जिसमें बड़ी संख्या में परिजनों ने भाग लिया।

आयोजकों ने कहा कि गंगा और गायत्री जीवन को परिष्कृत करने वाली दो धाराएँ हैं। गंगा स्थूल जगत में प्रवाहित होती हैं, और गायत्री प्राणों का उत्थान करती है। जीवन में सफल होना चाहते हैं तो गंगा और गायत्री का अनुसरण करना चाहिए।

जेएपी 1 डोरन्डा में 27 जुन को 1000 वृक्ष लगाया गया डीएसपी जेएपी 1 के द्वारा वृक्ष का पूजन करके मंत्र चादर एवं तिलक करने के बाद पेड लगाये गये। हजारों रूपयों का साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया। गायत्री परिवार के 20 परिजनों का सहयोग एवं 50 जेएपी जवानो का सहयोग मिला

इस अवसर पर आयोजित यज्ञ में कोरोना वायरस की मुक्ति एवं कोरोना वारियर्स के उत्साहवर्धन हेतु आराध्यदेव पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माता जी से विशेष प्रार्थना की गयी। इस दौरान पर्व के दिन शहर के विभिन्न स्थानों में पांच हजार से अधिक फलदार एवं छायादार पौधे रोपे गये और उसके संरक्षण के लिए लोगों को संकल्पित कराया गया। एस.टी.एफ के जवानों एवं अधिकारियों की वृक्षारोपण कार्य में विशेष भूमिका रही। गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा जवानों एवं अधिकारियों को युगसाहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि रांची द्वारा चलाया जा रहा वृक्षारोपण अभियान का यह बीसवाँ वर्ष है। अब तक लगाये गये पौधों मे से अस्सी प्रतिशत से अधिक पौधे बड़े हो गये हैं।

रांची झारखण्ड : वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेते परिजन

गोभक्त पनराज सिंह मंदिर में गायत्री परिवार द्वारा पौधारोपण

जैसलमेर, राजस्थान।

स्थानीय गायत्री परिवार एवं दीया (डिवाइन इंडिया युथ एसोसिएशन) जैसलमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में गोभक्त पनराज सिंह मंदिर में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर दिया के श्री नरेन्द्र सिंह भाटी ने कहा कि यह वर्ष शांतिकुंज की स्वर्ण जयंती वर्ष है। इस वर्ष ''घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग देश अपना बने निरोग'', वृक्षागंगा अभियान सहित विभिन्न योजनाओं को गति दिया जाना है।

इसी क्रम में गोभक्त पनराज सिंह मंदिर परिसर में नीम, बरगद, पीपल, ऑवला, बिल्व आदि के पौधे रोपे गये। यहाँ लगाये गये एक-एक पौधे को युवाओं ने गोद लेकर उसके संरक्षण करने का संकल्प लिया। अगले चरण में जैसलमेर के विभिन्न कस्बों, शहरों में वृक्षारोपण किया जायेगा।

इस अवसर पर डॉ. उमेश वारांगटीयार, गगेंद्र सिंह, महिपाल सिंह, नरेश सारस्वत आदि की सक्रिय भूमिका रही।

जेल परिसर में हुआ पौधरोपण

जहानाबाद, झारखण्ड।

गायत्री परिवार द्वारा मंडलकारा में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री राधेश्याम सुमन ने कहा कि पेड़ मानव जीवन को बचाने के लिए एक मात्र उपाय है। जेल प्रागंण में जितना ज्यादा पेड़ रहेगा, उतना ही अच्छा वातावरण कैदियों को मिलेगा। यह कैदियों के विचारों को सकारात्मक दिशा देने सहयोग करेगा। उन्होंने गायत्री परिवार के कार्यों की सराहना करते हुए कहा गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे जन्मदिन एवं विवाह दिन को यादगार बनाने के लिए एक-एक पौधा अवश्य लगायें।

सोते हुए को जगाना, जगे हुए को चलाना और चलते हुए को उसके लक्ष्य तक पहुँचाना हमारे विचार क्रांति अभियान का उद्देश्य है।

जन्मदिन में पांच विद्यालयों में रोपे 15 पौधे

सागर, मध्यप्रदेश।

शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत चलाये जा रहे वृक्षगंगा अभियान को गति देते हुए सागर के परिजनों ने शहर के शासकीय उच्च विद्यालय बम्हौरी, शासकीय उच्च विद्यालय बालिका शाला दाना, शासकीय माध्यमिक विद्यालय घाटमपुर, शासकीय उच्च विद्यालय बरौदा एवं शासकीय माध्यमिक शाला बरौदा में आम, अमरूद, ऑवला, नींबू, जामुन, पीपल आदि डेढ सौ से अधिक पौधे रोपे।

उल्लेखनीय है 22 जून को कु. नैनसी गुप्ता, कु. आशी सोनी का जन्मदिन एवं श्रीमती रेखा एवं श्री अनिल गुप्ता का विवाह दिन था। उन्होंने विद्यालयों में पौधे रोपकर जन्मदिन एवं विवाह दिन मनाया। आयोजन की सादगी एवं महत्त्व से अवगत हो इस वर्ष चौबीस सौ पौधे रोपने का संकल्प उभरा।

इसके साथ ही भिलईया, लोधीपुरा, पथरिया, जाट में भी फलदार एवं छायादार पौधे रोपे गये।

सागर : वृक्षारोपण करते परिजन

पूज्यवर के आदर्शों को अनुरूप विवाह बंधन में बँधे

इन्दौर, मध्यप्रदेश।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से बालपन में मिली सीख को अंगीकार करते हुए इंदौर निवासी चि. मृत्युंजय भट्ट (अंतर्राष्ट्रीय कंपनी में फाइनेंस एडवाइजर) ने देवास की सौ.काँ. अदिति (आर्टिकेक्ट) के साथ गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में आदर्श विवाह सूत्र में बंधे। नवदम्पति ने विवाह संस्कार के दौरान मिले जीवन मूल्यों के सूत्रों को युवाओं तक पहुँचाने के लिए संकल्पित हुए। चि. मृत्युंजय के पिता श्री महेन्द्र मोहन भट्ट (उपसंचालक, उद्यान, मप्र) ने बताया कि पूज्य गुरुदेव ने दहेज के लेन-देन को महापाप बताया है। इसी पाप से बचने के लिए हम आदर्श विवाह करने गायत्री तीर्थ पहुंचे। इंदौर में आयोजित समारोह में आये अतिथियों को पूज्यवर के युगसाहित्य के साथ औषधीय पौधे भेंट किये।

सात फेरे के लेने बाद लगाये सात पौधे

सोनीपत, हरियाणा।

ग्राम मदीना के चि. दीपक वशिष्ठ और माडल टाउन की सौ. काँ. प्रिया गायत्री मंदिर सोनीपत में पूज्यवर के बताये सूत्रों को ग्रहण करते हुए विवाह बंधन में बंधे। नवदम्पति ने विवाह संस्कार के बाद सात पौधे रोप कर उसका संरक्षण करने का संकल्प लिया। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल करते हुए परिजनों ने मेहमानों को एक- एक पौधे भेंट किये। उनके इस कार्य की विज्ञजन मुक्त कंठ से सराहना कर रहे हैं।

गायत्री पार्क में वृक्षारोपण करते नवदम्पति

स्कूलों, कॉलजों में भी फलदार एवं छायादार वृक्षारोपण

भोपाल, मध्यप्रदेश।

शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत चलाये जा रहे अभियान को गति देने के लिए युवा प्रकोष्ठ मध्यप्रदेश के युवा तत्पर हैं। इसी क्रम में निकटवर्ती गाँवों, कालोनियों में पीपल, बरगद, ऑवला, अशोक, आम आदि के पौधे रोपे जा रहे हैं। साथ ही कोविड-19 संक्रमण से मृत्मात्माओं की स्मृति में उनके परिजनों द्वारा एक-एक पौधे अतिरिक्त रोपे जा रहे हैं। पौधे के संरक्षण के लिए ट्री गार्ड भी लगाये जा रहे हैं। स्कूलों, कॉलजों में भी फलदार एवं छायादार वृक्षों के पौधे रोपकर उसके संरक्षण के लिए संकल्पित कराया गया। युवाओं की इस रचनात्मक पहल को प्रबुद्धजन एवं प्रशासन की ओर से सहयोग मिल रहा है। साथ ही युवा प्रकोष्ठ के युवा घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग का व्यापक प्रसार के लिए तैयार हो रहे हैं।

गायत्री जयंती उत्साहपूर्वक मनाया

बूँदी । राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूँदी में गंगा दशहरा एवं गायत्री जयन्ती पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर पूज्यवर के सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया गया। घर-घर पहुँचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग अभियान के अन्तर्गत प्रज्ञायोग के विस्तार हेतु प्रेरित किये। इस अवसर पर मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री सुरेश कुमार, दिया के डॉ संजय भल्ला, नवप्रभात दुबे आदि ने अपने-अपने विचार प्रकट किये।

गायत्री जयन्ती पर्व पर यज्ञ संचालन करती बहिने

विद्यालयों में हुआ पौधरोपण

सागर, मध्यप्रदेश

गायत्री परिवार सागर के परिजनों ने महाराणा प्रताप की जयंती, गायत्री जयंती पर वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया। इस दौरान शासकीय माध्यमिक शाला जमुनिया गौड़, ग्राम भिलईया, लोधीपुरा, पथरिया जाट सहित विभिन्न स्थानों पर औषधीय, फलदार एवं छायादार पौधे लगाये गये। यह क्रम विगत चार वर्ष से चल रहा है।

अभियान के संयोजक श्री रामजी गुप्ता ने बताया कि शांतिकुंज के वृक्षागंगा अभियान से प्रेरित हो जनपद सागर में वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया जा रहा है। अब तक लगाये गये पौधों में से अस्सी प्रतिशत से अधिक बड़े हो गये हैं। उन्होंने बताया कि पौधा रोपने वाले परिजन पौधों को मित्रवत संरक्षण देने के लिए संकल्पित कराये जाते हैं।

श्री दिनेश दुबे, सागर महिला मंडल की संयोजिका श्रीमती रेखा गुप्ता, जिला समन्वयक श्री आर. एल. शुक्ला, श्रीमती तनुज पाण्डेय, डॉ. अनिल खरे, श्री मनीष नेमा, आदि के नेतृत्व में विभिन्न स्थानों पर वृहद् स्तर पर पौधारोपण किया गया।

प्रान्तीय समीक्षा गोष्ठी में रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ाने पर बल

टाटानगर, झारखण्ड

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ झारखंड का 11वीं प्रान्तीय समीक्षा गोष्ठी में घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग सहित विभिन्न गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा हुई।

प्रांतीय युवा समन्वयक श्री संतोष कुमार राय एवं श्री सुरेश यादव ने बाल संस्कार शाला, गायत्री मंत्र लेखन, वृक्षारोपण, प्रज्ञायोग से जनमानस को जोड़ने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने पर बल दिया।

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री केदार प्रसाद दुबे, श्री सदानंद अंबेकर, श्री विनय केशरी ने युवाओं को समय के मांग अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर आनलाइन जुड़े युवाओं को संबोधित करते हुए श्री दुबे ने कहा कि युवा शक्ति के जागरण से ही राष्ट्र का जागरण संभव है। उन्होंने घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग अभियान के अन्तर्गत युवाओं को प्रज्ञायोग से जोड़ने तथा वर्षा ऋतु में अधिक से अधिक पौधे रोपने के लिए प्रेरित किया। अंत में सहायक प्रबंध ट्रस्टी सुश्री जसवीर कौर ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर राज्य के युवाओं ने ऑनलाइन जुड़कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

गायत्री जयन्ती पर विद्यालयों में पौधरोपण

मुलताई, मध्यप्रदेश

गायत्री परिवार मुलताई के परिजनों में वृक्षगंगा अभियान को गति देते हुए नगर के शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर, आचार्य श्रीराम शर्मा स्मृति उपवन सहित विभिन्न स्थानों में गायत्री जयंती के दिन एक हजार एक सौ से अधिक पौधे रोपे गये।

इस अवसर पर घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग अभियान एवं घर-घर गायत्री यज्ञ उपासना को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

गायत्री जयन्ती पर्व पर विद्यालयों में वृक्षारोपण करते परिजन

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सलेहा में गूँजेगा गायत्री मंत्र

सलेहा,गुन्नौर-सम्भल उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान एवं मार्गदर्शन में गायत्री परिवार शाखा नयागाँव (सलेहा) के सौजन्य से स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सलेहा के प्रसुति कक्ष में गायत्री मंत्र बजने वाले उपकरण लगाए गए। अस्पताल का वातावरण सात्विक एवं आध्यात्मिक बनाने हेतु गायत्री परिवार के आह्वान में इस अभियान को चलाते हुए मंत्र बॉक्स लगाए गए। इस कार्यक्रम में मेडिकल ऑफिसर डॉ.अजय चौधरी को गायत्री परिवार की ओर से युग साहित्य भेंट किया गया एवं इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से मेडिकल ऑफिसर डॉ. अजय चौधरी,भाजपा मंडल अध्यक्ष सलेहा हरेन्द्र त्रिपाठी, सोनू त्रिपाठी उपस्थित रहे।

बेजुबान पशुओं को चारा खिलाने में जुटा है युवा परीक्षित

हरिपुर कलाँ,देहरादून-उत्तराखण्ड

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज के निकट बसा हरिपुर कलाँ निवासी परीक्षित भाई जोशी बेजुबान अवारा पशुओं को चारा खिलाने का अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। विगत अप्रैल 22 से वे इस सेवाकार्य में जुटे हैं।

श्री जोशी बताते हैं कि अप्रैल 22 में कोरोना कर्फ्यू के दौरान हरिद्वार जा रहा था, तभी एक गाय को भोजन की कमी के कारण मरणासन्न स्थिति में देखा। मन काफी विचलित हुआ। कई दिनों तक सो नहीं पाया। इस बीच युगऋषि पूज्य गुरुदेव के सूत्र पीड़ा निवारण की बात बार-बार याद आ रही थी। अन्तर्मन से आवाज उठी कि इन अवारा पशुओं को चारा खिलाया जाये? तब से लेकर अब तक यह दैनिक दिनचर्या में शामिल हो गया है। पहले मैं अपने वेतन से ही चारा खरीदता और खिलाता था। अब मेरे कई मित्रों ने सहयोग के लिए हाथ बढ़ाया है। गाय, कुत्तों आदि पशुओं को भोजन कराने से आत्मिक संतुष्टि मिलती है। श्री परीक्षित जोशी बलसाड़ गुजरात के मूल निवासी हैं और हरिद्वार के एक कम्पनी मे सेवारत हैं।

हरिपुर कलाँ (देहरादून)पशु को चारा खिलाते श्री परीक्षितभाई जोशी

पूज्यवर की पुण्य तिथि में पौधरोपण

खरसिया, रायगढ, छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार खरसिया के कार्यकर्त्ताओं ने परम पूज्य गुरुदेव के 31वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आराध्यदेव को श्रद्धांजलि देते हुए पाँच सौ से अधिक पौधे रोपे। ये पौधे श्री रामफल सिदार द्वारा उपलब्ध करायी गयी भूमि, जिसमें स्मृति उपवन तैयार कीया जा रहा है, में लगाये गये।

गायत्री जयन्ती पर्व पर वृक्षारोपण करते परिजन

इस अवसर पर जिला समन्वयक श्री क्षीर सागर पटेल केन्द्र की योजनाओं को गति देने के लिए प्रेरित किया। घर-घर पहुँचे प्रज्ञायोग, देश अपना बने निरोग एवं वृक्ष गंगा अभियान आदि से सभी को जोड़ने के लिए आह्वान किया। इस अवसर पर सर्वश्री बी.एल. डनसेना, रामचरण सिदार, रामकुमार देवांगन, रोमी कुमार आदि उपस्थित रहे।

कोविड-19 वेक्सीनेशन मेगा केम्प गायत्री शक्तिपीठ में सम्पन्न

बालाघाट-मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बालाघाट पर अन्तराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को कोविड-19 मेगा वेक्सीनेशन कैम्प संस्कृति हाल प्रेमनगर बालाघाट में अठारह वर्ष से अधिक के 319 लोगों को वेक्सीन लगाई गई। यहाँ लक्ष्य 400 का था। आयुष्मान योजना के अन्तर्गत श्री राकेश ताम्रकार द्वारा 45 लोगों के निःशुल्क कार्ड बनाये गये। यह विशेष वैक्सीनेशन कैम्प, गायत्री परिवार के गणमान्य सदस्यों द्वारा प्रेरक उद्बोधन के साथ संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम का लाईव प्रसारण गायत्री शक्तिपीठ की फेसबुक पर किया गया।

वैक्सीनेश कैम्प में गायत्री परिवार के परिजन एवं वैक्सीन लगाती डॉक्टर्स की टीम

कोविड-19 मरीजों को रोज रात को पिलाया जायेगा हल्दीवाला दूध

भीनमाल-राजस्थान

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के सेवा संकल्प के तहत् गायत्री शक्तिपीठ व गायत्री गौशाला के कार्यकर्त्ताओं के द्वारा कोविड सेन्टरों पर एक माह तक गाय का दूध हल्दीयुक्त रोजाना रात में 9 बजे पिलाया जायेगा। उपखण्ड अधिकारी श्री ओमप्रकाश, डॉ. मिश्रीमल जांगिड की उपस्थिति में इसका शुभारम्भ किया गया। मरीजों का मनोबल बढ़ाने के लिए गायत्री मंत्र ध्वनियंत्र व हारिये न हिम्मत भी कोविड सेण्टर पर रखा गया। इस अवसर पर गायत्री परिवार भीनमाल के अनेक परिजन उपस्थित रहे।

गायत्री परिवार ने जरुरतमंदो में बांटी राहत सामग्री

विश्रामपुर-डीहरिया-पलामू-बिहार

गायत्री परिवार डीहरिया शाखा की युथ टीम ने मास्क और साबुन का वितरण किया, इसके अलावा विश्रामपुर नगर परिषद के आदिवासी बाहुल्य छिपादोहर गांव में गरीब, असहाय व वृद्धों को सामूहिक रूप से खिचड़ी का भोजन कराया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्रामपुर थाना प्रभारी धुमा किस्कू व एएआई अनंत कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर अतिथिओं को पूज्यवर का युग साहित्य वितरित किया गया। थाना प्रभारी धुमा किस्कू ने कहा कि गायत्री परिवार दुनिया को शांति का संदेश दे रहा है। अनंत कुमार सिंह ने कहा कि गायत्री परिवार धार्मिक अनुष्ठानों के अलावा सामाजिक सेवा का कार्य भी करता रहता है। इस अवसर पर नगर परिषद के प्रथम अध्यक्ष देवनारायणसिंह व निवर्तमान पार्षद सुनील चौधरी सहित गायत्री परिवार के अनेक परिजन उपस्थित थे।

गायत्री परिवार विश्रामपुर (डीहरिया)द्वारा खिचड़ी, मास्क एवं साबुन वितरण करते अधिकारी एवं गायत्री परिजन

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2021

विश्व योग दिवस

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में कोविड-19 के अनुशासनों का पालन करते हुए सातवाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संगीत विभाग के भाइयों द्वारा मनभावन संगीत से हुआ। पश्चात योगाचार्यों ने योगाभ्यास कराया । योगाचार्यों ने योगासन आदि की विस्तृत जानकारी दी।

विश्व योग दिवस योग करते शांतिकुंज के योगाचार्य

इस अवसर पर अपने वर्चुअल संदेश में देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि मन को कुप्रवृत्तियों से शुद्ध करने की जो यात्रा है, वह योग है और हमारे वैचारिक क्षमता को विकसित करने में सहायक गायत्री है। इन दोनों के आश्रय से मानवीय उत्कर्ष तक पहुंचा जा सकता है। इनके आश्रय से मनुष्य योगियों, संतों, महापुरुषों की श्रेणी तक पहुंच जाता है। मनुष्य जीवन इन्हीं संभावनाओं तक पहुंचने के लिए प्राप्त होता है। प्रतिकुलपति ने कहा कि देवसंस्कृति विश्वविद्यालय से योग में डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स के बाद युवा योग एम्बेसडर के रूप में काम कर सकेंगे।

कोविड-19 के अनुशासनों का पालन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस वर्चुअल सम्पन्न हुआ। शांतिकुंज वीडियो यूट्यूब चैनल के माध्यम से देश-विदेश के अनेक योग प्रशिक्षु प्रतिभाग करते हुए योगाभ्यास में भाग लिए।

गायत्री तीर्थ एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के निर्देशन में अलग-अलग आयु वर्ग में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इन प्रतियोगिताओं में उत्तराखण्ड की समृद्धि तथा भाषण प्रतियोगिता में हरिद्वार की अंशिता और राजस्थान के आशुतोष, रंगोली में ग्वालियर की दिया सिंह एवं ओडिशा की देवकी मेहेर, स्वरचित कविता में बिजनौर के रजतपाल तथा बिहार के श्याम सुन्दर, स्लोगन में मंडी के माधव गर्ग तथा शिवपुरी मप्र के कौशल, पोस्टर में उप्र की दीक्षा वर्मा तथा फतेहगढ़ की प्रगति वर्मा, निबंध प्रतियोगिता में उदयपुर की हिमांशु कुम्हार तथा इटावा की प्रियंका ने अपने-अपने आयु वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

> **“ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जीवन जीने की कला का संदेश लेकर आया है। नियमित योग करने से तन सुदृढ़ होता है और प्राणायाम एवं ध्यान करने से मन एकाग्र होता है। यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो योग, प्राणायाम और ध्यान को अपने दैनिक जीवनचर्या में अवश्य शामिल करें।**
>
> **-डॉ. प्रणव पण्ड्या**

श्रद्धेय ने जारी किया एक मोबाईल नंबर

गायत्री जयंती के पावन अवसर पर श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने एक मोबाइल नंबर अपने परिजनों के लिए जारी किया। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों एवं शांतिकुंज के रचनात्मक आंदोलनों, सूचनाओं संबंधी जानकारियों को अपने युग निर्माणी सेनानियों, कार्यकर्त्ताओं तक शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने के उद्देश्य से एक मोबाइल नंबर (**9258352222**) जारी किया है। परिजन केन्द्र से सीधे जानकारी लेने में एवं अपने अभियानों या गतिविधियों से अवगत कराने में उपयोग कर सकते हैं। इस मोबाइल नंबर पर कालिंग की सुविधा नहीं होगी, केवल व्हाट्सअप के माध्यम से सूचना आदान प्रदान किया जा सकेगा।

मोबाइल नंबर का विमोचन करते हुए श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्या जी

गायत्री तीर्थ से चलाये गये आनलाइन प्रशिक्षण

शांतिकुंज से संचालित हो रहे बालिकाओं की यज्ञीय टीम

कोविड-19 के अनुशासनों के कारण शांतिकुंज में नियमित रूप से चलने वाले साधना और विभिन्न प्रशिक्षण सत्रों में परिजन नहीं आ पा रहे हैं। अपने परिजनों की प्रशिक्षण की इस कमी को दूर करने के उद्देश्य से आनलाइन प्रशिक्षण का क्रम प्रारंभ चलाया है। नौनिहालों के लिए 24 जून से 30 जून की तारीखों में बालसंस्कार शाला शिविर चलाये गये। इसमें नौनिहालों के शारीरिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए योग, संगीत, प्रेरणाप्रद कहानियाँ, आर्ट एवं क्राप्ट आदि सिखाये गये। इससे बच्चों में उत्साह एवं संकल्प जगा। इसी तरह योग, यज्ञ और कर्मकाण्ड प्रशिक्षण का क्रम चलाया गया। नियमित रूप से चले इन कक्षाओं से परिजनों में भीउत्साह का संचार हुआ।

> **“ शांतिकुंज से उच्च प्रशिक्षित भाई-बहिनों द्वारा वर्चुअल प्रशिक्षण कराये जाने से हमारे परिजनों में उत्साहवर्धन होने के समाचार हमें मिल रहे हैं। कोविड-19 से परिस्थिति सामान्य होने पर परिजन गुरुधाम आकर प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे।**
>
> **-डॉ. प्रणव पण्ड्या**

शांतिकुंज के युवाओं ने सीखे प्राथमिक चिकित्सा के सूत्र

भारतीय आयुर्विज्ञान चिकित्सा संस्थान (एम्स) ऋषिकेश के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. गिरीश गुप्ता ने शांतिकुंज, देसंविवि के युवाओं को प्राथमिक चिकित्सा के विविध उपायों की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आपदा की स्थिति में हताश बिलकुल नहीं होना चाहिए। जब कभी किसी का हार्ट अटैक हो, तो स्थिति का अवलोकन करने के पश्चात छाती पर हल्का-हल्का प्रेशर देना चाहिए। मुंह में कपड़ा लगाकर मुंह से हवा देने का प्रयास करना चाहिए। इसी तरह चोट या दुर्घटना के बाद धैर्य के साथ कार्य करना चाहिए। ध्यान रखें आपकी सावधानी किसी की जान बचा सकती है। इस अवसर पर शांतिकुंज कार्यकर्ता एवं सुरक्षा विभाग के स्वयंसेवक आदि उपस्थित रहे।

> **“ मैं स्वयं एमडी (मेडीसिन) हूँ। हर स्थान पर चिकित्सक का उपलब्ध हो पाना असंभव है। प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण लेकर जरूरतमंदों की जान की रक्षा कर पुण्य का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण गायत्री परिवार के प्रत्येक युवाओं को अवश्य लेना चाहिए। - डॉ. प्रणव पण्ड्या**

‘घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग-देश अपना बने निरोग’ अभियान की शुरुआत

विश्व योग दिवस के अवसर पर देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने ‘‘**घर-घर पहुंचे प्रज्ञायोग-देश अपना बने निरोग**’’ अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये प्रज्ञायोग मनुष्य के अंदर देवत्व को जगाने में सहायक है। प्रज्ञायोग के नियमित अभ्यास से शरीर स्वस्थ, मन स्वच्छ और सभ्य समाज का निर्माण संभव है। यह अभियान एक वर्ष तक चलेगा। इसके अंतर्गत घर-घर प्रज्ञायोग पहुंचाने के साथ-साथ निबंध, शोध पत्र लेखन, सेमिनार, वेबिनार सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होगा।

देवसंस्कृति विवि और सिडकुल के बीच हुआ समझौता

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज एवं सिडकुल मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन हरिद्वार के बीच भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु समझौता हुआ। इसके अंतर्गत दोनों संस्थान भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार को और अधिक प्रभावशाली बनाने की दिशा में मिलकर कदम उठायेंगे।

इस अवसर पर प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति के विस्तार में हम दोनों एक दूसरे का सहयोग करेंगे और राष्ट्र की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक धरोहरों को संचित करने की दिशा में मिलकर काम करेंगे। सिडकुल मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन उत्तराखण्ड के अध्यक्ष श्री हरेन्द्र गर्ग ने कहा कि देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के साथ समझौता करना हमारे लिए गौरव की बात है। माननीय प्रतिकुलपति जी के निर्देशन में भारतीय संस्कृति विस्तार के लिए काम करेंगे। इस अवसर पर सिडकुल मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन के महामंत्री श्री राज अरोड़ा, जगदीश लाल पाहवा आदि उपस्थित रहे।

आद.डॉ.विन्मय पंड्याजी प्रतिकुलपति देसंविवि एवं श्री हरेन्द्र गर्ग अध्यक्ष सिडकुल

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय पधारे आचार्य बालकृष्ण जी

दिनांक 15 जून 2021 को पतंजलि योगपीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी देवसंस्कृति विश्वविद्यालय पहुंचे। यहाँ उन्होंने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट किया। इस अवसर पर दोनों महानुभावों ने समाज में युवाओं की गिरती जीवन शैली पर चिंता प्रकट की। दोनों ने युवा पीढ़ी के चहुंमुखी विकास के लिए साथ मिलकर काम करने पर सहमति जताई।

इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण जी ने शांतिकुंज एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा संचालित विभिन्न रचनात्मक एवं सुधारात्मक कार्यों की सराहना की। आदरणीय चिन्मय जी ने आचार्य बालकृष्ण जी को युग साहित्य एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

आचार्य बालकृष्ण को युग साहित्य भेंट करते आदरणीय डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.7.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23